# प्रथम अध्याय

## "अबक जी का जीवन परिचय"

## ' अश्क ' जी का जीवन परिचय --

आधुनिक हिन्दी साहित्य में श्री उपेंद्रनाथ ' अश्क ' का नाम विविध साहित्यिक विधाओं के क्षेत्र में अपनी रचनात्मक देन के लिए विशिष्टता रखता है। श्री उपेन्द्रनाथ ' अश्क ' सर्वतोन्मुखी प्रतिभावान, हिन्दी के अग्रण्य साहित्य-कार, लब्ध प्रतिष्ठित कहानीकार, प्रख्यात उपन्यासकार एवं रंगमंचीय दृष्टि से सफल नाटक एवं एकांकीकार के रूपमें बहुश्रुत हैं। अपने दैनिक जीवन में मिलनसार, सौम्य, मधुरभाषी, उदारचेता एवं विषम पारिवारिक परिस्थितियों के होते हुए भी सदैव मंद मुस्कान होठों पर अपना अधिपत्य स्थापित रखती है। ' अश्क ' की चाल सज-धज ऐसा अनोखा का आकर्षण प्रस्तुत करती कि देखनेवाले बरबस उधर खिंचे चले जाते। फेल्ट हैट, जो सिरपर जान-बूझकर टेढा रखा हुआ है, बाये हाथ पर झूलता ओवर कोट, स्वेटर, जवाहरकट, कोट और मफलर होते हुए भी, दाएँ हाथ में ब्रीफकेस जो कटपीस के दलालों से लेकर लाइफ इंश्योरेंस के एजेन्टों तक के हाथ में दिखाई देता है, चश्मे के पीछे से झाँकती आँखें और उनके नीचे उभरी हुई हड्डियाँ आदि उनके आकर्षक व्यक्तित्व का उद्घोष करती है। पारिवारिक झंझावातों एवं बचपन से ही अत्यधिक बीमारी ग्रस्त रहने के परिणाम स्वरुप नियमित रूप से अध्ययन करने में असमर्थ रहें। प्रत्येक विघ्न एवं बीमारी के उपरांत ' अश्क ' को एक अभूतपूर्व शक्ति का आभास होता और इनके लेखन व्यक्तित्व का अतिउर्वर युग का शुभारम्भ होता था। लेखक प्रेरणा इन्हें अपने कलुषित परिवेश एवं अति भ्रमण की स्वानुभूति के कारण हुई।" [१]

कारयत्री प्रतिभा इन्हें जन्म जात प्राप्त हुई थी। एक साहित्यिक के रूप में भी अपना परिचय इन्होंने साहित्य के विभिन्न अंगो का लेखन कर हिन्दी

---

१ ' अश्क ' का कथा साहित्य - डॉ. अहिबरन सिंह - पृ.१।

जगत को प्रिय । साहित्य की शायद ही ऐसी कोई विधा होगी जहाँ इनकी पैठ निर्बाध गति से न हो । अपना लेखन कार्य उर्दू से प्रारम्भ किया था परन्तु कुछ ही समय बाद हिन्दी लेखन प्रारम्भ किया जो इतना प्रबल हो गया कि आज तक हिन्दी जगत को अपने अनकों ग्रन्थ प्रदान किये ।* १

जन्म तथा परिवार --

१४ दिसम्बर सन १८१० से सौभाग्यशाली दिन उपेन्द्रनाथ अश्क अपने साथ एक महान लेखन प्रतिभा शक्ति को लेकर पंजाब प्रान्त के जलन्धर नामक नगर में एक मध्य वित्त ब्राह्मण परिवार में अवतरित हुए थे । ` अश्क ` ने स्वयं अपने सात भाइयों का उल्लेख किया हैं । ये छ: भाइयों मे दूसरे हैं । शिक्षा जालन्धर से ही प्रारम्भ हुई थी । जब यह १९२४ ,आठवीं कक्षा से विद्यार्थी थे तभी अत्यधिक बीमार हो गये और आठ माँ तक लगातार मलेरिया से पीडित रहे तो डॉक्टरों ने इन्हें जलवायु बदलने का परामर्श किया । अपना अध्ययन स्थगित कर आप पिता के पास चले गये जो पंजाब के एक गुमनाम से कस्बे ` दसुआ ` में स्टेशन मास्टर थे ।* २

शिक्षा एवं महत्वाकांक्षा --

` दसुआ ` की जलवायु में इनका स्वास्थ ठीक होने लगा । अध्ययन तो छूट ही गया था अत: स्टेशन पर दिन-दिन घूमा करते,सभी पास के बागों में भी चले जाते और तालाब के किनारे शहतूत के पेडोंकी छाया में लेटे रहते थे । कुछ महीनों के बाद पुन: जालन्धर लौट आये । यहाँ एंग्लो संस्कृति हाई स्कूल की प्राइमरी शाखा में सीधे तीसरी कक्षा में प्रवेश करा दिये गये क्योंकि इनकी माँ घर पर स्वयं पहले से पढाती रही थीं । यहीं के स्थानीय कॉलेज से

---

१ ` अश्क ` का कथा साहित्य - डॉ.अहिवरनसिंह - पृ.१

२ ` अश्क ` का कथा साहित्य - डॉ.अहिवरनसिंह - पृ.१० ।

मैट्रिक एवं डी.ए.वी.कॉलेज से सन १९३१ में बी.ए.की परिक्षा उत्तीर्ण की थी ।[१]

महत्वाकांक्षी होने से ` बचपन से ही अध्यापक बनने, लेखक और संपादक बनने, वक्ता और वकील बनने, अभिनेता और डायरेक्टर बनने, थियेटर अथवा फिल्म में जाने के अनेक सपने देखा करते थे । बी.ए.पास करने के उपरांत यह अपने ही स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गये पर यह कार्य अधिक समय तक नहीं कर सके और दो साल उपरान्त सन १९३३ में उससे त्यागपत्र दे दिया । अध्यापनकार्य समाप्त कर जीविकोपार्जन हेतु साप्ताहिक पत्र ` भूचाल ` का संपादन किया और एक अन्य साप्ताहिक ` गुब्बारा ` के लिए प्रति सप्ताह एक रुपये में एक कहानी लिखकर दी ।[२]

सन १९३४ में अचानक सब छोड लाहौर कॉलेज में प्रवेश लिया और १९३६ में प्रथम श्रेणी में ला पास कर लिया । इसी वर्ष लम्बी बीमारी और प्रथम पत्नी के देहांत के उपरान्त इनके जीवन में एक अभूतपूर्व मोड आया । इन्होंने कचहरी जाना या अन्य नौकरी का विचार ही त्याग दिया और मात्र साहित्यिक सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया । १९३६ के पश्चात ही ` अश्क ` के लेखन व्यक्तित्व अति उर्वर युग प्रारंभ हुआ । यद्यपि इनकी कहानियाँ सन १९३३ से ही विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाने लगी थीं । तथापि यह अपना क्षेत्र अभी तक निश्चित नहीं कर पाये थे । उर्दू में नवरत्न ` और ` औरत की फितरत ` दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके थे ।[३]

सन १९३६ में अश्क पैंने दो साल के लिए प्रीति नगर चले गये । जो सम्भवत: अमृतसर से १६ मील दूर है । वहाँ से निकलनेवाली एक मासिक पत्रिका

---

१ ` अश्क ` का कथा साहित्य - डॉ.अख्तर सिंह - पृ.१० ।

२ वही पृ.१० ।

३ वही पृ.१० ।

के उर्दू हिन्दी दोनों संस्करणों का सम्पादन करने लगे । यहीं पर कुछ कहानियों के अतिरिक्त 'छटा बेटा' नाटक और 'गिरती दीवारें' उपन्यास का काफी भाग लिखा ।'[१]

दूसरी शादी --

पहली पत्नी की यक्ष्मा से मृत्यु के पश्चात पुन: शादी करने को अभिलाषा 'अश्क' ने न की परन्तु परिस्थितिवश अनिच्छापूर्वक फरवरी १९४१ में दूसरी शादी की, जिसके बनावटी प्रेम एवं नारकीय जीवन से छुटकारा पाने हेतु उसे मैके भेजकर १२ सितम्बर सन १९४१ में इन्होंने अपना तीसरा विवाह कौशल्या अश्क से किया जो सभ्यपरिवेश में पली, सुशिक्षित एवं सफल पत्नी हैं । कौशल्या जी का पालन पोषण इनके मामा जी ने किया था जो स्वयं अमेरिका का भ्रमण किए थे । पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव उन पर होना अतिस्वाभाविक ही है, उनका सभ्य समाज की रीति नीति पर अतिरिक्त विश्वास था । ऐसी सहधर्मिणी पाकर अश्क जी की रचना प्रक्रिया को और भी बढावा मिला ।'[२]

आकाशवाणी एवं चलचित्र जगत में --

इसी साल ऑल इंडिया रेडियो में परामर्शदाता के रूप में नौकरी की । यहाँ पूरे तीन वर्षों तक कार्य करते रहे । अपनी नौकरी के दिनों में उन्होंने 'कबीरदास', तुलसीदास' मर्यादा पुरूषोत्तम राम, भगवान बुध्द, उर्मिला और निर्मला सरीखे रेडियो नाटक लिखे । मर्यादा पुरूषोत्तम राम का रेकार्ड बी.बी.सी.लन्दन से भी ब्रॉडकास्ट हुआ । 'निर्मला' प्रेमचन्द के उपन्यास का रेडियो संस्करण था । १९४५ से दिसम्बर माह में अम्बई के फिल्म जगत के निमन्त्रन को स्वीकार कर वहाँ फिल्मों में लेखन कार्य करने लगे । फिल्मो

---

१ 'अश्क' का कथा साहित्य' - डॉ.अहिवरन सिंह - पृ.११ ।

२ वही पृ.११ ।

दुनिया में अश्क जी दो बर्ष रहें । इन दो वर्षों के दौरान में उन्होंने नीतिन बोस के फिल्म `मजदूर` और बी.मित्रा के फिल्म` सफर` के डायलाग लिखे और दोनों फिल्मों का संवाद निर्देशन भी स्वयं किया ।` मजदूर` के संवाद सन १९४५ में बनी फिल्मों के संवादों में सर्वश्रेष्ठ समझे गये और` सफर ` बॉक्स आफिस` पर हिट साबित हुई । श्री वीरेन्द्र देसाई तथा नलिनी जयवन्त के लिए एक कहानी और उसके गाने लिखे और नीतिन बोस को फिल्म` मजदूर` और अशोक कुमार को फिल्म` आठदिन` में अभिनय भी किया । बचपन की चिर अभिलाषा की पूर्ति कुछ हदतक हुई अवश्य लेकिन ऐसा ज्ञात होता है कि वास्तविकता जब ` अश्क` को मालूम हुई तो वह अत्यन्त कटु थी और हो सकता है इसी के प्रभाव से उन्होंने अपनी प्रसिध्द नाटिका ` पैंतरे ` जो फिल्म जगत पर ही लिखी गयी है,सो लिखा हो । पृथ्वीराज कपूर एवं बलराज सहानी के चरित्र से अश्क प्रभावित लगते है ।" [१]

यक्ष्मा बीमारी --

दिसम्बर १९४६ में इन्हें यक्ष्मा हो गया । इस घातक बीमारी से भी इन्हें शीघ्र छुटकारा न मिला । अन्ततोगत्वा अप्रैल सन १९४७ में इनकी पत्नी ` कौशल्या अश्क` इन्हें पंचगनी ले गयी और सेनेटोरियम में प्रवेश करा दिया । यहाँ इन्हें छ: माह कुछ भी लेखन कार्य करने की अनुमती नहीं प्राप्त हुई ,फिर भी यह कुछ कविताये आदि लिखते रहे । छ: माह बाद इनका उस सेनेटोरियम से निष्कासन हुआ और स्वास्थ भी धीरे धीरे सुधरने लगा । इन्हीं दिनों देश का विभाजन एवं दंगे आदि भी होने लगे जिससे अश्क को महान दु:ख होता था । इस की हल्की झलक इनकी प्रसिध्द कहानी ` टेबल लैंप ` में प्राप्त होती है ।[२]

---

१ ` अश्क` का कथा साहित्य - डॉ.अहिवरनसिंह - पृ.११ ।

२ वही पृ.१२ ।

सन १९४८ से १९५३ तक अश्क दम्पति के जीवन में संघर्ष के वर्ष रहे । जुलाई सन १९४८ में पंचगनी होते हुए इलाहाबाद आ गये । यहाँ आकर ज्ञात हुआ कि मकानों की बड़ी विषम समस्या है । सामान अधिक होने के कारण इन्हें अतिरिक्त कठिनाई का सामना करना पड़ा । तेरह बक्से तो पुस्तकों के थे साथ ही बीवी बच्चे भी । यहाँ यह स्वर्गीय प्रेमचंद के बड़े पुत्र श्री पतराय के साथ १४ हेस्टिंग्ज पर रहते रहे । यहीं नीलाभ प्रकाशन गृह की व्यवस्था की जिससे उनके सम्पूर्ण साहित्यिक व्यक्ति को रचना और प्रकाशन दोनों दृष्टियों से सजह पथ मिला ।'[१]

' अश्क ' की रुचि पढ़ने के साथ ही लिखने की भी प्रारम्भ ही से थी । १९३३ में उनकी पहली हिन्दी कहानी ' हंस ' मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई जो तत्कालीन विख्यात पत्रिकाओं में अपना स्थान रखती थी । इसके संपादक मुन्शी प्रेमचंद थे उन्हें ' अश्क ' की यह कहानी बहुत पसंद आयी । उन्हें हिन्दी में कहानी लेखन की प्रेरणा देनेवालों में मुन्शी प्रेमचंद, हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्ट और माखनलाल चतुर्वेदी का नाम विशेष उल्लेखनीय है ।'[२]

माता-पिता --

' अश्क ' के पिता पंडित माधोराम स्टेशन मास्टर, बड़े विलासप्रिय व्यक्ति थे । ईश अनुकम्पा से गला भी उन्होंने अच्छा पाया था । उत्तरदायित्व-पूर्ण अधिकारी होते हुए भी फक्कड़, दबंग, खाने-पीने और जीने वाले, मस्त मौला बेपरवाह आदमी थे । उन्हें इस बात की चिंता न थी कि हमारे यह सात-सात बच्चे क्या कर रहे हैं । उन पर नौकरी, बीवी-बच्चों किसी का सुधारक प्रभाव नहीं पड़ा । ऐसा शायद ही कोई स्टेशन हो जहाँ पर उन्होंने दो चार मुकदमें न लड़े हों । इसके विपरीत अश्क की माताजी ममता, सब्र और संतोष की

---

१ ' अश्क ' का कथा साहित्य - डॉ. अम्बिरन सिंह - पृ.१२ ।

२ वही पृ.१२

साक्षात देवी थीं । वह दु:खों व गमों की मारी हुई ,सहानुभूति एवं उदारता, संतान स्नेह और सच्ची पतिनिष्ठा का प्रतिमूर्ति थीं । एक बार पति के परम मित्र श्री धर्म चंद्र के साथ बीस पच्चीस आदमियों के अचानक आ जाने पर तीन बजे रात को सभी को भोजन कराया था । उनके चेहरे पर किसी प्रकार की शिकायत न थी वरन् सम्पूर्ण कार्य विधिवत सम्पन्न हो जाने के कारण उनके मुँह पर अतीव प्रसन्नता थीं ।" १

संघर्ष एवं प्रतिभा --

विषम प्रेमपूरित परिवेश में रहते हुए जहाँ शिक्षा की कोई पैठ नहीं, वरन आठवीं कक्षा ही से शराब,जुआ,सिगरेट पीने वाले,बात-बात में गाली देने वाले अपने पूज्य पिता से परिस्थिति का समझौता करना और भाइयों में लगभग बड़े होने के नाते गृह कार्य का सम्पूर्ण भार सम्भालना,पढ़ना और बीमारी, खून की बीमारी,फेफड़े में दिल के कीड़ों का पढ़ना,दोनों फेफड़े खराब,ए.पी. अर्थात कृत्रिम हवा लेते,ग्रस्त होते हुए भी सृजन की इतनी महान क्षमता से सहज ही 'अश्क' की लेखन शक्ति और भाव तथा अनुभूति जगत की समृध्दता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। मेरा निश्चित मत है कि अश्क के जैसे परिवेश में पला जहाँ निरन्तर झंझावातों का स्वागत करना होता था,बीमारी का निरंतर साथ करना था फिर भी जो रचना शक्ति दिखाई वैसा शायद ही इतनी शिक्षा ग्रहण करने वाले किसी साहित्यिक व्यक्ति में दिखायी हो । 'अश्क' ने माँ सरस्वती के पावन मूर्ति की पूजा विभिन्न पुष्पों ,कहानी,उपन्यास, लेख ,संस्मरण,रेखाचित्र,आलोचना,नाटक,एकांकी ,कविता,सम्पादन आदि के द्वारा करके आधुनिक युग में अपना अक्षय कीर्तिमान स्थापित कर लिया है ।" २

---

१ 'अश्क' का कथा साहित्य - डॉ.अश्विरन सिंह - पृ.१२ ।

२ वही पृ.१३ ।

' अश्क ' माँ सरस्वती की आराधना में लम्बी एवं सफल यात्रा तय कर चुके हैं । वह अपने पुष्पों के माध्यम से हिन्दी जगत को सुवासित कर रहे हैं । विभिन्न साहित्यिक विधाओं में झंडा गाड चुके हैं । मैं समझता हूँ हिन्दी साहित्य की वह अनवरत सेवा कर रहे हैं और काव्य पिपासु चातकों को स्वाति बूँदो साहित्य प्रदान करेंगे । हिन्दी जगत उनकी ओर अभिलाषा पूर्ण नेत्रों से आशा लगाये है - आजकल भी अम्भवत: अश्क जी एक कथा कृति का सृजन कर रहे हैं - कथा कृति नही वरन कथा कृति का दूसरा बृहत खंड । आशा है अभी ' अश्क ' जी से कई महत्वपूर्ण ग्रंथों की प्राप्ति हिन्दी साहित्यिक जगत को होगी[१]।

संघर्ष अश्क का दूसरा नाम है । निम्नमध्यवर्गीय युवा के स्वाभिमान के प्रतीक रहे हैं अश्क । इस वर्ग के एक युवा स्वाभिमानी को जितने थपेडे खाने पड सकते हैं,अश्क ने खाए हैं । वे बराबर एक स्वप्नजीवी,महत्वाकांक्षी रहे हैं । क्या नहीं बनना चाहा उन्होंने अध्यापक,लेखक,सम्पादक,वक्ता,वकील,अभिनेता,निर्देशक सब कुछ । स्वाभाविक है कि ऐसे आदमी का जीवन प्रयोग धर्मी होता है । इस संबंध में उन्होंने लिखा है ," मैंने जीवन की विभिन्नता का आभास पाया है और थोडा-बहुत अनुभव भी प्राप्त किया है । समाचार-पत्र के एक साधारण रिपोर्टर के रूपमें जीवन संघर्ष आरंभ करके,मैंने अध्यापक,अनुवादक,सम्पादक ,वक्ता,जिज्ञापन-विशेषज्ञ,वकील,रेडियो-नाटककार,फिल्म अभिनेता,संवाद निर्देशक और सिनारिस्ट की हैसियत से तरह तरह के अनुभव प्राप्त किए हैं, तरह तरह के लोगों से मिला हूँ और असंख्य दुखद अथवा सुखद घटनाएँ मेरे मस्तिष्क में सुरक्षित पडी है । उनका जीवन तो शमा हर रंग में जलती है सहर होने तक - का ज्वलंत उदाहरण है । हर रंग में उन्होंने अपने जीवन को पूरी मस्ती और बेफिक्री में जिया है - चाहे आवाज लगाकर अखबार बेचा हो,रुमाल बेचे हो अथवा अनुवाद किया हो ।" [२]

---

१ ' अश्क ' का कथा साहित्य - डॉ.अहिबरन सिंह - पृ.१३ ।

२ उपन्यासकार ' अश्क ' - चन्देश्वर कर्ण पृ.२ ।

अश्क का व्यक्तित्व इतना गहन है कि उसे समझाना बहुत आसान नहीं है। भैरव प्रसाद गुप्त ठीक ही कहते हैं कि 'अश्क के व्यक्तित्व को एक आध संस्मरण में उतार देना मुझे कठिन दिखाई देता है। अपनी सारी रोचकता, नाटकीयता और पक्कड़पन, बहुरंगियेतन तथा खुलेपन को लिए हुए भी उनका व्यक्तित्व इतना विषम, इतना गहरा, इतना विरल, इतना गम्भीर तथा इतना ठोस है कि एक दो नहीं, सौ-पचास संस्मरणों के बल पर भी उनको एक काम-चलाऊ तस्वीर उतार लेना कठिन है।' ठीक ही उनका व्यक्तित्व उनका कृतित्व उनका फ्राड, उनकी तिकड़मी चालें, उनकी व्यावसायिकता, उनका प्रचार-प्रसार, मित्र-शत्रुओं द्वारा प्रशंसा तथा कटु आलोचनाओं ने ऐसी भ्रामक एवं विचित्र - सी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि अश्क को एक मुकम्मल तस्वीर खींच लेना या उनके व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप दे देना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य हो गया है, । 'बिच्छू का डंक पकड़ना और अश्क के व्यक्तित्व को उकेरना एक बराबर है।' [१]

उग्र के बाद, जिसने अपनी खबर ली, हिन्दी साहित्य में अश्क के अतिरिक्त कोई नहीं है। वे अपनी प्रति निर्मम रहे हैं। अपने ही विरुध्द वे भ्रामक प्रचार करते रहे हैं। उन्होंने मित्र से अधिक शत्रु बनाएँ हैं। राजेन्द्र यादव ने ठीक ही लिखा है, 'मन तो यहाँ तक कहने को करता है कि अश्क जी मित्रों के बिना शायद रह लें, लेकिन शत्रुओं के बिना रह ही नहीं सकते - उन्हें मित्र बनाने की ही कला नहीं आती, शत्रु बनाने की भी कला आती है।' [२]

आत्मविश्वास महत्वाकांक्षा का पूरक है। यह दोनों अश्क में हैं। आत्म प्रशंसा से भी उन्हें कोई हिचक नहीं। यह सब संघर्ष और साधना से पैदा हैं। वे स्वाभिमानी हैं। अनाचारों के विरुध्द लड़ना, अधिकारों के लिए संघर्ष करना इनके व्यक्तित्व का वैशिष्ठ है।' [३]

---

१ उपन्यासकार 'अश्क' - चन्द्रेश्वर कर्ण - पृ.३।

२ वही पृ.३।

३ वही पृ.४।